मुक्तिबोध की कविताओं में सामाजिक मूल्यबोध

डॉ. लालचंद सिन्हा

सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय नवीन महाविद्यालय, ठेलकाडीह
जिला– खैरागढ़–छुईखदान–गंडई(छ.ग.)

कुछ ऐसे भी महान व्यक्तित्व हुआ करते हैं जिनका यथोचित मूल्यांकन उनके वर्तमान समय में नहीं हो पाता और वे उपेक्षित बने रहते हैं। गजानन माधव मुक्तिबोध भी नई कविता के ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं,जिनका मूल्यांकन मृत्यु के बाद हुआ। श्रीकांत वर्मा का मत है कि ''कविता का प्रत्येक युग अपने संदर्भ–ग्रंथ की तलाश करता है। .....मृत्यु पश्चात् मुक्तिबोध युवा कवियों का संदर्भ–ग्रंथ बन गए। उनके जीवन और मृत्यु में युवा कवियों ने अपने लिए एक अर्थ प्राप्त किया और उनकी कविता में उन्होंने वे सभी चुनौतियाँ पायी जो कि उनके मन में अस्पष्ट रूप से मौजूद थी।'' 1 मुक्तिबोध हमारे समकालीन कवि थे। उनकी कविताओं का एक स्वतंत्र अस्तित्व है। किंतु उनके व्यक्तित्व और आर्थिक स्तर के पूर्वाग्रहों से ग्रसित पाठक उनकी कविता में निहित जनहितवादी पक्ष को हीन और टूटा हुआ मान लेते हैं। श्रीकांत वर्मा जी मुक्तिबोध की कविताओं की समसामयिक संदर्भवत्ता को रेखांकित करते हुए लिखते हैं – ''अपने जीवनकाल में या मृत्यु के बाद बुत की तरह स्थापित हो जाना नहीं बल्कि आनेवाले युगों के लिए चुनौती के रूप में बने रहना अमरता है। अनिर्णीत साहित्य ही इतिहास की कड़ियों में जुड़नेवाला साहित्य है। मुक्तिबोध का साहित्य अब भी अनिर्णीत है और आगे भी रहेगा– एक चुनौती के रूप में बना रहना ही उसकी नियति है।'' 2

मुक्तिबोध के काव्य में द्वन्द्व के भीतर द्वन्द्व की परते ही परतें हैं। आज के व्यक्ति–मन का अंतर्द्वन्द्व उनकी कविता का केन्द्रीय विषय है। उनकी प्रत्येक कविता में द्वन्द्व से परिपुष्ट एक घटना चक्र की व्यंजना मिलेगीं। जो इन परतों को खोल सकने का सामर्थ्य रख सकेगा वही उनके काव्य के मर्म को समझ सकेगा। संभवतः इसी सत्य का उद्‌घाटन अपनी कविता 'दिमागी गुहांधकार का ओराँग उटाँग' में किया है – ''स्वप्न के भीतर एक स्वप्न/विचारधारा के भीतर और एक अन्य/सघन विचारधारा प्रछन्न/कथ्य के भीतर एक अनुरोधी विरूद्ध विपरीत/नेपथ्य संगीत/मस्तिष्क के भीतर एक मस्तिष्क/उसके भी अन्दर एक और कक्ष/ 3

यथार्थ जीवन के संघर्षों और इतिहास की भाव–बोधपूर्ण जैसी तथ्यात्मक प्रतीति मुक्तिबोध के काव्यों में मिलती है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। मानवीय आत्मपीड़न और सत्रास की अभिव्यक्ति का काव्य है। उनकी प्रत्येक कविता जलती हुई आग है। जो आधुनिक चेतना संपन्न पाठक के मानस में भी आग पैदा कर देती है। **एक भूतपूर्व विद्राही का आत्मकथन** कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –''दुःख तुम्हे भी है, दुःख मुझे भी/हम एक ढहे हुए मकान के नीचे दबे हैं/चीख निकालना भी मुश्किल है/असंभव..... हिलना भी/ भयानक है बड़े–बड़े ढेरों की/ पहाड़ियों नीचे दबे रहना और महसूस करते जाना/पसली की टूटी हुई हड्‌डी।''4

मुक्तिबोध की कविताओं में यंत्रणा,संत्रास,घूटन,भूख,उत्पीड़न,दरिद्रता, मृत्यु और सामाजिक उलझनों के साथ साथ अस्तित्व रक्षण हेतु मनुष्यता की चीख सुनायी पड़ती है। –''खुबसूरत कमरों में कई बार/हमारी आँखों के सामने/हमारे विद्रोह के बावजूद/बलात्कार किए गए/नक्षीदार कक्षों में/भोले निर्व्याज नयन हिरनों से/मासूम चेहरे, निर्दोष तन बदन/दैत्यों की बाँहों के शिकंजों में/इतने अधिक जकड़े गये/कि जकड़े ही जाने के सिकुड़ते हुए घेरे वे तन मन/दबते पिघलते हुए एक भाप बन गये।''5

मुक्तिबोध की कविताओं में ट्रेजडी और संत्रास आधुनिक जीवन की पीड़ाबोध के संदर्भ में हुआ है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों,पूर्वाग्रहों, नियमों,वर्जनाओं और व्यवधानों से व्यक्ति निरंतर संघर्षरत रहता है तब वह संत्रास का शिकार हो जाता है। आज के परिवेश में अभाव,आकस्मिकता,षड़यंत्र,उच्छृंखलता,हत्याएँ आदि मरणोन्मुख स्थितियों को विवशतापूर्वक

भोगना पड़ता है। **'दिमागी गुहाँधकार का ओराँग उटाँग'** कविता की ये पंक्तियाँ अवलोकनीय है– ''विवाद में हिस्सा लेता हुआ मैं/सुनता हूँ ध्यान से/अपने ही शब्दों का नाद, प्रवाह और/पाता हूँ अकस्मात/स्वयं के स्वर में/ ओराँग उटाँग की बौखलाती हुंकृति ध्वनियाँ/एकाएक भयभीत पाता हूँ/पसीने से सिंचित यह नग्न मन/ हाय–हाय कोई जान न ले/कि नग्न और विद्रूप असत्य का प्रतिरूप/ प्राकृत ओराँग उटाँग यह मुझमें छिपा है। ''6

मुक्तिबोध मार्क्सवादी विचारधारा से सहमत और संपृक्त थे। वे अपने मित्र नेमीचंद जैन के माध्यम से द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद से परिचय को अपने जीवन क्रांतिकारी मोड़ लाने वाला माना। नन्दकिशोर नवल जी लिखते हैं –''वे जिस युग में उत्पन्न हुए थे, वह अपने देश में पूँजीवाद के विकास और सामंतवाद के ह्रास का युग था। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साम्राज्यवाद के पतन के साथ पूँजीवाद का ह्रास भी शुरू हो गया था। .....स्वभावतः उन्होंने पूँजीवाद–सामंतवाद का विरोध किया और समाजवादी समाज के स्वप्न को अपने लेखन में प्रतिफलित किया।''7 दमन और शोषण अतिशय स्वार्थपरता सामंतवाद–पूंजीवाद के अस्त्र हैं। अपने स्वार्थ के लिए वे समाज को,दुनिया को,मानवीय मूल्यों की हत्या कर अपनी खून सनी उँगलियों से लकीरें खींचकर विभाजित करते रहते हैं। **'बारह बजे रात के'** नामक कविता की निम्न पंक्तियों में यह यथार्थ रूप में अंकित है – ''यूरोपियन पूँजी की आँखों से दुनिया को निहारकर /घुग्घुओं का जमघट/एक बात कहता है/ इमारत में क्या क्या है/ भवन के सातवे तल्ले पर कुछ लोग/दुनिया की आत्मा की चीर फाड़/ करने के बाद ही /टेबल पर बहती हुई लोहू की धारा में/ उँगलियाँ डूबोकर खून की लकीरों से/देशों की नयी नयी खूनी लाल लाल सरहदें/सीमाएँ बनाते ही जाते हैं''.....'' युद्ध के लाल–लाल/ प्रदीप्त स्फुलिंगों से लगते हैं/बिजली के दीप हमें/ लन्दन में वाशिंगटन,/वाशिंगटन में पेरिस की पूँजी की चिन्ता में/युद्ध की वार्ताएँ सोने न देती है/किराए की आजादी/ चाँटे सी पड़ी है,पर रोने न देती है/जर्मनी संगीत, अमरीकी संगीत/जब मानव और मनुष्य हमें होने न देता है''8 '' शोषण की अतिमात्रा/स्वार्थों की सुख यात्रा/जब–जब सम्पन्न हुई/आत्मा से अर्थ गया, मर गयी सभ्यता।''9'' भूल–गलती/आज बैठी है जिरहबख्तर पहनकर/तख्त पर दिल के/चमकते हैं खड़े उसके दूर तक/आँखे चिलकती है नुकीली तेज पत्थर सी/खड़ी है सिर झुकाये सब कतारें/बेजुबाँ बेबस सलाम में/अनगिनत खम्भों व मेहराबों थमें/ दरबारे आम में।''10

वर्ग संघर्ष का अहसास दलित,शोषित,किसान,मजदूर वर्ग के प्रति सहानुभूति, पूँजीवादी समाज की भर्त्सना, वर्गहीन समाज की परिकल्पना और सतत संघर्ष की प्रतिबद्धता के साथ कवि को यह पूर्ण विश्वास है कि शोषण और दमन करने वाली व्यवस्था का अंत अवश्यंभावी है। **'शब्दों का अर्थ जब'** की ये पंक्तियाँ प्रस्तुत है– '' शब्दों का अर्थ जब/गिन्नी–सा,रूपयों–सा,पैसों–सा बोलेगा/पाताली लोकों में/लोभों के प्रेतों का/डोलेगा सिंहासन।''11 इसी प्रकार विश्वासपूर्ण भाव का उदाहरण उनकी **'जिंदगी बुरादा तो बारूद बनेगी ही '** कविता से उद्धृत है – ''अँधेरा मेरा खास वतन/ जब आग पकड़ता है। ये बड़ी बड़ी मंजिलें धधकती खड़ी–खड़ी/औ' वहीं कहीं /अधजले ठूँठ की कटी पिटी डाल पर / बच गये घोंसलों में पक्षिणियाँ अपने बच्चे सेती है/तन की गरमी से मन गरमी देती है/यह साफ बात/ जिन्दगी बुरादा तो बारूद बनेगी ही।''12

मुक्तिबोध जी ने अपने जीवन में जिस पीड़ा, वेदना को भोगा था,उसकी छटपटाहट को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। वे समाज के प्रति इतने सचेत थे कि उस समाज को एक विशेष दिशा में ले जाने का उन्होंने स्वप्न देखा और आजीवन प्रयत्न भी किया– **–मैं तुम लोगों से दूर हूँ'** कविता की पंक्तियाँ अवलोकनीय **है –** '' मैं तुम लोगों से दूर हूँ/तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न है/कि जो तुम्हारे लिए विष है,मेरे लिए अन्न है/––– असफलता का धूल कचरा ओढ़े हूँ/इसलिए कि वह चक्करदार जीनों में पर मिलती है छल छद्म धन के/किन्तु मैं सीधी सादी पटरी पटरी दौड़ा हूँ जीवन की/फिर भी अपनी सार्थकता से खिन्न हूँ/निज से अप्रसन्न हूँ/इसलिए कि जो है उससे बेहतर चाहिए/ पूरी दूनिया साफ करने के लिए मेहतर चाहिए/वह मेहतर मैं नहीं हो पाता/पर, रोज कोई भीतर चिल्लाता है/कि कोई काम बुरा नहीं/बशर्ते कि आदमी खरा हो।''13

मुक्तिबोध जी जड़ समाज में जिस खतरे की ओर बार–बार संकेत है, उसका मूलाधार उनकी विचारधारा और अनुभवशील व्यक्तित्व है।इसकी रक्षा हेतु वे सदैव प्रकाशपूर्ण सुविधा को छोड़कर कंटकों से भरे अंधरे को स्वीकार करता है। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए समाज के निम्नवर्गों की वास्तविकता से पूर्ण परिचित होना चाहता है। आत्मचेतस् की अभिव्यक्ति के लिए वे सारे खतरे मोल लेने का संकल्प लेता है –**'अँधेरे में'** कविता में वे संकल्प लेते हैं – अब

अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने होंगे/तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब/ पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार/ तब कहीं देखने को मिलेंगी बाहें/ जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता/अरूण कमल एक/धँसना ही होगा/झील के हिम–शीत सुनील जल में।''14

मुक्तिबोध जी की काव्य चेतना का मूलाधार है मानवीय संवेदना। वे जीवन पर्यन्त एक ही समस्या को लेकर चिन्तित रहते थे– मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में/ सभी मानव/ सुखी,सुन्दर व शोषण–मुक्त कब होंगे।''15

मुक्तिबोध का काव्य आज के सामान्य मानव की असहायता, घुटन, छटपटाहट को उपस्थित कर उसकी मुक्ति का मार्ग खोजता है। वह निर्बल मानव के मुख को नव आशा की ज्योति से आलोकित होते देखना चाहता है। इसके लिए वे सर्वहारा वर्ग को सर्जन की शक्ति ग्रहण करने और संघर्ष की प्रेरणा देते हैं। उनका विश्वास है कि – '' मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में/चमकता हीरा है/हर एक छाती में आत्मा अधीरा है/प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है/मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है। '' .....'' मुझे कदम–कदम पर/ चौराहे मिलते हैं/बाँहे फैलाये/एक पैर रखता हूँ,कि सौ राहें फूटतीं हैं/व मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ।'' 15 वे ध्यानाकर्षित करते हुए कहते हैं– ''याद रखो/कभी अकेले में मुक्ति नहीं मिलती/यदि वह है तो सबके साथ है।''16

श्रीकांत वर्मा के शब्दों निष्कर्षतः यह है कि '' हिन्दुस्तान केवल नक्शे में नहीं कविता में भी है। और शायद कविता का हिन्दुस्तान ज्यादा सच है। इस हिन्दुस्तान को पहचानने में हिन्दी कविता को लगभग पचास वर्ष लग गए। और जब प्रश्नाहत 'मनु' को पहचाना गया तब तक देश सचमुच ही 'अँधेरे में जा चुका था। मुक्तिबोध की सार्थकता इसमें है कि उन्होंने इतिहास के प्रश्नों को केवल 'इतिहास के प्रश्न' कहकर नहीं छोड़ दिया, बल्कि उन्हें कविता के प्रश्नों में बदल दिया।''

संदर्भ सूची –

1 छत्तीसगढ़ में मुक्तिबोध : संपादक राजेन्द्र मिश्र पृ 17 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

2. छत्तीसगढ़ में मुक्तिबोध : संपादक राजेन्द्र मिश्र पृ 17 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

3 मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ.163 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

4 मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ.135 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

5 मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 136 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

6 मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 165 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

7. मुक्तिबोधः नन्दकिशोर नवलः पृ. 46 साहित्य अकादेमी

8. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 25 – 26 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

9. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 268 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

10. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 390 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

11. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 35 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

12. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 171 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

13. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 219 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

14. मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 348 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

15 मुक्तिबोध रचनावलीःदो पृ. 172 संपादक नेमीचंद जैन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली

16. छत्तीसगढ़ में मुक्तिबोध : संपादक राजेन्द्र मिश्र पृ 9